प्रधान हिन्दी, बी० ए० पार्ट-1

डॉ० अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज आरा
M: 9204396227

3.5.19

कफन

प्रश्न : प्रेमचंद द्वारा लिखित 'कफन' कहानी के प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए।

उत्तर : 'कफन' हिन्दी कहानी की ~~[illegible]~~ एक उत्कृष्ट रचना है। इस कहानी के लेखक प्रेमचँद जी हैं। उन्होंने ~~[illegible]~~ शोषण से भरे समाज में ~~[illegible]~~ घीसू और माधव के माध्यम से उसके मूल्यों के खोखलेपन को इस तरह उजागर किया है जहाँ मौत भी शर्माती है। घीसू और माधव यहाँ प्रतीक हैं समाज के उस निम्नवर्गीय व्यक्ति का जिनके पास जीने का कोई साधन नहीं है। वे सामाजिक शोषण के चक्र से भली-भाँति परिचित हैं। इसी कारण दोनों कामचोर हो जाते हैं। वे दूसरों के खेतों से चोरी करते हैं, डाँट खाते हैं, मार खाते हैं फिर भी उनकी प्रकृति नहीं बदलती। माधव की पत्नी बुधिया उनके इस कर्म पर रोती है, छाती पिटती है। फिर भी उनपर कोई फर्क नहीं पड़ता। वे दोनों अव्वल दर्जे के कामचोर हैं। बुधिया किसी दूसरों के घरों में काम करके घर का खर्च उठाती है। कहानी असली मोड़ वहाँ आता है जब बुधिया प्रसव पीड़ा से छटपटा रही होती है और घीसू और माधव बे-परवाह दूसरे के खेत से चुराकर लाये आलू को भूनकर खा रहे होते हैं। आलू खाने में वे इतने मग्न हैं कि बुधिया के चीख-पुकार को भी वे अनसुना कर देते हैं। एक बार कोठरी में पड़ी कराहती बुधिया को देखने भी नहीं जाते कि उसकी क्या स्थिति है। यह अमानवीय घटना संवेदन-हीनता की पराकाष्ठा है। किंतु उन दोनों के बीच संवेदना बची कहाँ है? हारकर बुधिया प्राण त्याग देती है। घीसू माधव तो कहते हैं-

घीसू और माधव महज दो पात्र नहीं। वे समाज में ढलते हुए मूल्यों के प्रतीक हैं। जिन मूल्यों को बनाने में समाज को बर्षों लगा दिया, वे मूल्य इतना जल्दी भरभरा कर गिरने लगते हैं, किसने सोचा था। हमारा समाज कैसा मूल्य गढ़ रहा है। 'कफन' कहानी इसका जवाब माँगती है। ~~घीसू~~ घीसू, माधव और बुधिया की दुर्दशा का जिम्मेदार कौन है? गरीबी की मार ने उनके विवेक को कुंठित कर दिया है। घर में पत्नी की लाश है पर वे इतने संवेदन-शून्य हैं कि उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं। लोक-लाज और समाज का कोई भय नहीं। फिर भी, घीसू और माधव क्रांतिकारी पात्र हैं। क्रांतिकारी इस मायने में कि वे समाज के बने बनाए ढाँचे पर प्रहार करते हैं, ~~[illegible]~~ वे समाज के खोखले मूल्यों और रीति-रिवाजों का मखौल उड़ाते हैं और समाज के लोक-लिहाज की भी परवाह नहीं ~~नहीं~~ करते। वास्तव में यह हमारे सभ्य समाज के मुँह पर एक ~~[illegible]~~ तमाचा है। हमारा समाज और उसकी संस्थाएँ बस मूक दर्शक बनकर अपने फटे लबादे को चिथड़े-चिथड़े उड़ते देखता रहता है। इस दृष्टि से घीसू और माधव विद्रोही पात्र के रूप में हमारे सामने उभर कर आते हैं।

'कफन' कहानी समाज की विषमता एवं उसकी कठोरता पर गहरा व्यंग्य उपस्थित करता है। यहाँ घीसू और माधव की गरीबी और कुंठा ~~[illegible]~~ पूरे मजदूर एवं किसान वर्ग की दयनीय स्थिति की कथा को अभिव्यक्त करती है। यथार्थ का इतना कड़वा सच अन्यत्र देखने को न मिले। घीसू और माधव तो बस माध्यम हैं उस कड़वे सच को बयान करने का जहाँ मनुष्य को इतना कमजोर बना दिया गया है जहाँ वह अपने स्वाभिमान की भी रक्षा न कर सके। P.T.O.

चलो मुक्ति मिली। अगर बच्चा हुआ होता तो गुड़, सोंठ तेल कुछ भी तो नहीं है घर में। यह कहकर फिर दोनों आलू खाने लगे। आलू खाकर दोनों ने पानी पिया, वहीं अलाव के सामने अपनी धोतियाँ ओढ़कर पाँव में पेट डाले सो गए।

जब सुबह हुई तो माधव की स्त्री मरी पड़ी थी उसके पेट में ही बच्चा मर गया था। दोनों जोर जोर से हाय-हाय कर रोने लगे। गाँव के लोग मर्यादा के अनुसार उनके घर की ओर दौड़े और दोनों को समझाने-बुझाने लगे। किंतु अब सबसे बड़ा प्रश्न था लकड़ी और कफन का क्योंकि चील के घोंसले में माँस कहाँ से आता।

इस तरह यह कहानी मानवीय विडंबना का विलाप है। गाँव के जीवन का विद्रूप चेहरे को यह कहानी दिखलाती है। यहाँ यथार्थ को बदलने की या नाटकीय बनाने की जरूरत न थी। जिन्दगी ने स्वयं ही एक बना-बनाया ढाँचा लेखक के सामने प्रस्तुत कर दिया था, जिसमें प्रेमचंद जी ने अपने अनुकूल रंग भरे। निश्चय ही 'कफन' एक विख्यात भरी कहानी है।

'कफन' कहानी उस व्यवस्था पर प्रश्न उठाता जहाँ रात-दिन श्रम करने वाले मेहनतकशों को भी दो जून रोटी नसीब नहीं होती। वहाँ घीसू और माधव के मन में उस समाज के प्रति नफरत का भाव था। वे दिन रात मेहनत करने वाले मेहनतकशों से अपने को श्रेष्ठ मानते थे, उन्हें गुलामी तो नहीं करनी पड़ती थी। बुधिया के मर जाने के बाद उनका अंतर्मन यही कहता था कि कफन के लिए वे ही लोग पैसा देंगे जो उन्हें देखकर नाक-भौं सिकोड़ते हैं। जब कफन का इंतजाम हो गया तो उनका ज्ञान भी जाग उठा 'कैसा बुरा रिवाज है, जीते जी तन ढँकने को कपड़ा भी न मिले, मरने पर नया कफन चाहिए। कफन लाश के साथ जल ही तो जाता है।'

P.T.O

कहानीकार ने समाज के धनी वर्ग के द्वारा [redacted] समाज में शोषण का जो चक्र चलाया जा रहा उसकी परंपरा एवं रीतियों पर कठोर प्रहार किया है। यहाँ घीसू और माधव इस क्रूर व्यवस्था में पिसते हुए पूरे मानव समुदाय के प्रतिनिधि [redacted] के रूप में आ खड़े होते हैं जो इस क्रूर व्यवस्था के खिलाफ न केवल उठ खड़ा होता है बल्कि उसे चुनौती भी देता है। इस तरह ये दोनों पात्र हिन्दी साहित्य के कालजयी नायक बनकर उपस्थित होते हैं। व्यंग्य एवं विद्रूपताओं से भरी यह कहानी सचमुच हिन्दी साहित्य की कालजयी कहानियों में गिनी जाएगी। यह कहानी न केवल हमारे सामने चुनौती पेश करती वरन हमें सजग-सचेत भी बनाती है। यही इस कहानी का प्रतिपाद्य है।

B. A. Part I
Hindi (H)
कफन कहानी की समीक्षा